भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद्

(हिन्दी परिशिष्ट)

खंड २२] जून १९७० [अंक १

अनुक्रमणिका

१. सांख्यिकी, संगणक और हमारा आधुनिक समाज द्वारा कार्ल एफ० कोसाक ... iii

२. भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद्—१९६९ में किये गए कार्यों का पुनर्वलोकन ... vi

३. भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद्, नई दिल्ली—आय तथा व्यय का लेखा ... x

सांख्यिकी, संगणक और हमारा आधुनिक समाज

द्वारा कार्ल एफ० कोसाक

आई० ए० आर० एस० में एफ० ए० ओ० के परामर्शदाता

जब कभी मैं श्रोताओं, विशेषकर साधारण श्रोताओं, को संगणक से परिचित कराता हूँ तो मैं इसके द्वारा आंकिक संगणना तथा संग्रहीत सूचना विधायन के क्षेत्र में जो क्रान्तिकारी प्रभाव पड़े हैं पर इस विचार से अधिक ज़ोर देता हूँ कि इस प्रकार की गतिविधियों की गति दो दशकों से भी कम समय में छः गुना बढ़ गई है। हमारे आज के गतिशील समाज की माँग है कि अनुसन्धान के क्षेत्र में भी हमेशा अनिश्चितता को ध्यान में रखते हुए शीघ्र लेकिन अर्थपूर्ण निर्णय लिये जायँ। इसी में सांख्यिकों के लिये वास्तविक चुनौती निहित है।

क्या हम लोग सांख्यिकों की हैसियत से आधुनिक संगणक की गति और शक्ति को इस प्रकार संनद्ध कर सकते हैं कि यह आधुनिक समाज को इस चुनौती का उत्तर दे सके। इस बात के अनेक उदाहरण मिलते हैं कि किस प्रकार हमारे आधुनिक समाज ने औषधविज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधानिक उपलब्धि के प्रवाह को तीव्रतम होने के लिये उकसाया है।

यदि सांख्यिक चाहते हैं कि वे निर्णायकों को विज्ञान पर आधारित विधियों को सुझाते रहने का कार्य जारी रखें तो इस प्रश्न की आलोचनात्मक व्याख्या करना उचित प्रतीत होता है कि क्या आधुनिक समाज द्वारा निर्णायकों पर डाली गई समयानुकूल आवश्यकताओं का समाधान सुझाने में वे समर्थ हैं? इस प्रश्न पर विचार करने के पूर्व मेरे विचार से हमें उन अतिरिक्त क्षमताओं को केन्द्रित करना होगा जो कि नये तृतीय वंशीय संगणक ने मनुष्य को उसकी गणनाओं और संग्रहीत सूचना के विधायन में प्रयोग करने के लिये प्रदान की हैं। ऐसी दो क्षमताओं का यहाँ उल्लेख किया जा सकता है। इनमें से एक है स्पष्ट रूप से बड़ी और शीघ्र सुलभ स्मृति प्रणाली की शुरूआत जो कि विराट सूचना संचय के रूप में है और दूसरी है पुरानी सावधिक प्रणाली का यन्त्र तथा मनुष्य वार्ता की क्षमता सहित विकास।

हम देखते हैं कि संगणक केन्द्रों में प्राप्य सांख्यिकीय उपनैत्यक बहुत से बहुत डिब्बाबन्द किस्म के हैं जिनमें विश्लेषण की अचर प्रतिकृतियाँ सम्मिलित हैं और

प्राय: संगणक केन्द्र के कर्मचारियों द्वारा वास्तव में पूर्णतया जाँची भी नहीं जाती हैं। संगणक केन्द्रों से सम्बन्धित सांख्यिकीय कर्मचारी प्राय: अल्पशिक्षित तथा अपरिपक्व होते हैं क्योंकि 'व्यावसायिक सांख्यिक' गणना जैसे सांसारिक विस्तार से स्वयं को सम्बिन्धित नहीं रखते हैं। इस प्रकार हमारे सामने यह स्थिति है कि यह शक्तिशाली और चमत्कारपूर्ण विश्लेषण यन्त्र विज्ञान और औद्योगिकी की प्रत्येक शाखा को प्रभावित कर रहा है लेकिन सांख्यिकों को अभी तक चुनौती का उत्तर देना है।

क्योंकि अब संगणक रहना ही है अत: हम सांख्यिकी के उन विभिन्न क्षेत्रों पर विचार करेंगे जिनमें कि कुछ परिवर्तन और संशोधन किये जा सकते हैं। पहले क्षेत्र को मैं कहूँगा "संग्रहीत सूचना विधायन और प्राचल प्रतिरूपण" क्योंकि बहुत से उपयोग जिनका कि हम उल्लेख करेंगे इसी प्रकृति हैं। उपलब्ध सांख्यिकीय संगणक नैत्यकों का पुनर्वलोकन मैंने यह निश्चित करने के लिये किया था कि ऐसे सामान्य कार्यक्रमों द्वारा लोगों को क्या-क्या प्रगत उपयोग उपलब्ध हो सकते हैं। इस प्रयास के परिणामस्वरूप सात प्रगत उपयोग प्राप्त हुए जोकि निम्नलिखित हैं :—

१. पुँज विश्लेषण
२. शक्ति पुँज विश्लेषण
३. अवयव विश्लेषण
४. सह प्रतिपायन
५. सामान्य रेखीय प्रतिरूप
६. प्रत्युत्तर तलविश्लेषण
७. बहुविचर सांख्यिकीय वर्गीकरण

मैं 'सूचना नत्थी जनन' के लिये न्यादर्श सर्वेक्षण पर भी विचार करना चाहूँगा कि सांख्यिकीय रीतियाँ, जब कि वे उपयुक्त रूप से आधुनिक संगणक से सम्बन्धित हों, किस प्रकार आधुनिक समाज की बढ़ती हुई माँगों को पूरी कर सकती हैं। उस अभिगमन मार्ग को, जिसका मैं उल्लेख करना चाहता हूँ, मैं सूचना नत्थी व्यवस्था के लिए शाश्वत अन्वेशक अभिगमन मार्ग कहूँगा। योजना बनाने से संबंधित सूचना प्रदान करने वाले किसी भी कार्यक्रम में निम्मलिखित बातें अवश्य सम्मिलित होनी चाहिये :—

१. समग्र के योग की अपेक्षा छोटी इकाइयों या समूहों के बारे में सूचना आवश्यक है।

२. सूचना वर्तमान होनी चाहिये क्योंकि योजना पर साप्ताहिक तथा मासिक परिवर्तन भी प्रभाव डालते हैं।

३. वैषयिक प्रकार के विचारों को मापना आवश्यक है जिसके लिये शिक्षित तथा अनुभवी कर्मचारी चाहिए।

४. सूचना नत्थियों के आवश्यक विश्लेषण गतिवान प्रकृति के होते हैं और सूक्ष्म तथा विस्तृत विश्लेषण क्षमताओं की आवश्यकता रखते हैं।

५. मूल्याँकन के लिये प्रायः कूटनीतिपूर्ण विधि की आवश्यकता होती है।

६. सूचना अर्जक कार्यक्रमों के विश्लेषण तथा आकल्पन में प्रावैधिक सलाहकारों की सदैव आवश्यकता होती है।

७. कार्यक्रम के लिए आर्थिक सहयोग का आश्वासन बना रहना आवश्यक है।

आज हम स्वयं को ऐसी स्थिति में पाते हैं जहाँ आधुनिक वैज्ञानिक योजना, सूचना नत्थियों से ऐसी माँगों के पूर्ण होने की अपेक्षा रखती है जो कि सांख्यिकों के द्वारा पहले से प्रयोग में लाये जाने वाले प्रतिष्ठित न्यादर्श सर्वेक्षणों की विधि से प्रभावपूर्ण तरीके पूर्ण नहीं हो सकती। सौभाग्यवश आधुनिक संगणक प्राद्यौगिकी के आगमन से ऐसी क्षमताओं का प्रतिपादन हुआ है जो सूचना की इन नई जरूरतों को भली प्रकार पूरी करने में मदद देती हैं।

यदि कोई ऐसे संसाधन विषय जो कि एक सूचना नत्थी बनाते हैं के समग्र पर विचार करे तो सामान्यतया वह प्रत्येक विषय के साथ दो विचरों को पहचान सकता है। इनमें से एक हैं वर्णनात्मक विचर जो कि या तो बदले जाने में मन्द है अथवा कुछ वैधकिस्म विवरणात्मक गतिविधियों में उपदिनांकित किये जा सकते हैं तथा दूसरे हैं संसाधन विचर जो कि वर्तमान उत्पादन के स्तर को वर्णित करते हैं तथा प्रायः परिवर्तित होते रहते हैं। ये दूसरे प्रकार के विचर ही अधिकतर योजना के विचारों से सम्बन्धित होते हैं अतः इनके बारे में वर्तमानतम सूचना का होना आवश्यक है।

जैसा कि मेरा विश्वास है कि आधुनिक समाज की आवश्यकतायें तो किसी न किसी तरह पूरी हो ही जायेंगी और इसके लिये जो विधि निश्चित होगी उसमें आधुनिक और द्रुतगति वाला संगणक महत्वपूर्ण भाग निभायेगा लेकिन सांख्यिकों को चुनौती का सामना करने की आवश्यकता है अन्यथा आधुनिक प्राद्यौगिकी में जो उनका स्थान हैं उसके खो जाने की आशंका बनी रहेगी।

उन्नत सांख्यिकीय उपयोग तो वर्तमान समय में भी उपलब्ध हैं तथा संगणक की शक्ति का उपयोग भी करते हैं लेकिन वे सामान्यतया सांख्यिकीय पाठ्यक्रम के एक भाग के रूप में ही चल रहे हैं और शक्तिशाली विश्लेषण के कलान्यास से समर्थ होते हुए भी बहुत कम उपयोग में लाये जाते हैं। सांख्यिकीय प्रविधियाँ जो कि विश्लेषकों और निर्णायकों के लिये उपयोगी यन्त्र सिद्ध हो सकती हैं, प्रयोग के योग्य ही नहीं हैं क्योंकि वे वास्तविक संसार में स्थित प्रतिबन्धों के आधार पर खरी नहीं उतरती हैं। संगणक की शक्ति की वास्तविक प्रशंसा यह है कि यदि इसकी ऐसी सांख्यिकीय प्रविधियों जो कि वास्तविक समस्या के समाधान में प्रयुक्त होती हैं के बनाने में प्रयोग किया जाय तो इन प्रविधियों द्वारा हमारे आधुनिक समाज

के प्रति अंशदान स्पष्ट रूप से बढ़ जायगा। अतः समस्या इस बात की है कि अब तक की प्रवृत्ति को बदलने वाले यन्त्रन्यास की खोज हो और सांख्यिकी का पुनर्स्थापन अधिक प्रायोगिक तथा अर्थपूर्ण क्षेत्र में हो।

भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद्—१९६९ में किये गये कार्यों का पुनर्वलोकन

भारतीय कृषि सांख्यकी संसद् की कार्यकारिणी परिषद् की ओर से, ३० जून, १९६९ को समाप्य वर्ष में संसद् के कार्यों का विवरण प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है। इस वर्ष संसद की सदस्यता २३६ थी। सदस्यों में ७ सम्मानार्थ, ८ संरक्षक, ६५ आजीवन सदस्य और १५६ साधारण सदस्य हैं। संसद् की सदस्यता भारत के सभी भागों तथा विदेशों में कृषि और अन्य विभागों, संस्थाओं तथा विश्वविद्यालयों के साथ-साथ कृषि सांख्यिकों और सांख्यिकी के विकास में रुचि रखने वाले दूसरे कार्यकर्त्ताओं से पूरित है। नियमित सदस्यता के अतिरिक्त संसद् अपनी पत्रिका के अधिदायकों की सूची भी बनाये रखती है जिसमें कि भारतीय तथा विदेशी अनुसन्धान संस्थाएँ सम्मिलित हैं। इस वर्ष भारतीय तथा विदेशी अधिदायकों की संख्या २२६ थी।

जहाँ तक संसद् के प्रकाशन कार्यक्रम का प्रश्न है, वर्त्तमान वर्ष में पत्रिका के २१वें खण्ड का अंक १ (१२६९) प्रकाशित हो चुका है। दूसरा अंक मुद्रणाधीन है। पत्रिका का प्रकाशन आर० के प्रिन्टर्स, दिल्ली, के सहयोग से समयानुसार चल रहा है। सम्पादकों तथा लेखकों के प्रयास से पत्रिका का स्तर उच्च बना हुआ है अतः समस्त संसार में इस प्रकार की सुप्रसिद्ध संस्थाओं के प्रकाशनों से संसद् को पत्रिका के विनिमय के लिये प्रायः माँग आती रहती है। किन्तु संसद की कार्यकारिणी इस विनिमय को सावधानीपूर्वक चयन किये गये प्रकाशनों तक ही सीमित रखती है। इस समय ऐसी २४ पत्रिकायें है जो कि संसद की पत्रिका के बदले में प्राप्त होती है और ये कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्था, नई दिल्ली के पुस्तकालय में रखी हैं तथा संसद् के सदस्यों को प्राप्य हैं।

हिन्दी परिशिष्ट पत्रिका की विशेषता के रूप में बना हुआ है। यह सांख्यिकी विषय पर हुए वाद-विवाद को राष्ट्रभाषा हिन्दी में यथार्थ वर्णन करने के संसद् के प्रयास को प्रदर्शित करता है। कार्यकारिणी ने संसद् की पत्रिका में प्रावैधिक लेखों को हिन्दी में प्रकाशित करने का निर्णय किया है। ऐसे लेखों का सारांश अंग्रेजी में प्रकाशित किया जायगा।

संसद् के वैज्ञानिक कार्यकलापों तथा पत्रिका के मुद्रण के लिये प्रर्याप्त धन की समस्या संसद् की कार्यकारिणी परिषद का ध्यान आकर्षित करती रहती है। ऐसी प्रावैधिक पत्रिका के मुद्रण आदि का व्यय अधिक होने के कारण इसका प्रकाशन उन अनुदानों द्वारा चलाया जाता है जो केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों तथा अन्य राष्ट्रीय संस्थाओं से मिलते हैं। विवरणाधीन वर्ष में अनुदान महाराष्ट्र, उड़ीसा, तथा उत्तर प्रदेश की राज्य सरकारों तथा राष्ट्रीय वैज्ञानिक संस्था से मिले। संसद इन संगठनों से प्राप्त वित्तीय सहायता के लिये उनका आभार प्रगट करना चाहती है।

संसद् के प्रकाशन, डा० पी० वी० सुखात्मे द्वारा रचित पुस्तक, "न्यादर्श सिद्धान्त तथा उनका प्रयोग", की माँग निरन्तर चल रही है। प्रतिदर्शी सिद्धान्तों पर इस महत्वपूर्ण पुस्तक के संशोधित संस्करण तैयार हो गया है और मुद्रणाधीन है तथा शीघ ही प्राप्य होगा।* इसका प्रकाशन भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद् तथा एशिया पब्लिशिंग हाउस द्वारा संयुक्त रूप से किया जा रहा है। पुस्तक के संशोधित संस्करण का मूल्य अधिक होने की सम्भावना है। फिर भी, हमें यह सूचित करते हुए प्रसन्नता है कि पुस्तक को वास्तविक विद्यार्थियों तथा अनुसन्धान-कर्त्ताओं को घटी हुई दरों पर बेचने के लिए भारत सरकार ने एक उपयुक्त धन राशि राज्य सहायता के रूप में देना स्वीकार कर लिया है।

जैसा कि गत वर्ष सूचित किया गया था, कृषि सांख्यिकी अनुसन्धान संस्था नई दिल्ली के निकट पृथक् किराये पर लिये गये भवन में संसद् के अनुसन्धान विभाग की स्थापना संसद् का एक महत्वपूर्ण कार्य है। यह कार्य भारत सरकार से प्राप्त धन राशि द्वारा सम्भव हुआ। संसद इस विभाग की स्थापना तथा इसके विकास और बने रहने में भारी रुचि लेने के लिए भारत सरकार के अर्थ अंक सलाहकार श्री जे० एस० शर्मा के प्रति अति आभारी है।

इस योजना के अन्तर्गत एक अनुसन्धान सांख्यिक तथा कुछ संगणकीय कर्मचारियों की नियुक्ति की गई है। पशुधन सांख्यिकी सम्बन्धी उपलब्ध आँकड़ों का विश्लेषण कार्यक्रम आरम्भ किया गया है जिससे कि भविष्य में पशुधन सम्बन्धी अर्थशास्त्र, जनसंख्या के लिए दूध की आवश्यकता तथा गाय-भैंसों के लिए खाद्य तथा चारे की आवश्यकता का अनुमान लगाया जा सके। इन समस्याओं को हल करने के लिए, केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन, नई दिल्ली में प्रशिक्षण के प्रभारी अधिकारी श्री वी० एन० आम्ले मार्ग दर्शन कर रहे हैं। संसद् के अनुसन्धान कार्यों का मार्ग दर्शन करने तथा अनुसन्धान योग्य समस्याओं को सुझाने के लिए एक अनुसन्धान निदेशन समिति बनाई गई है।

डा० वी० जी० पान्से द्वारा समर्पित मूल्यवान सेवाओं की प्रशंसा में परिषद् ने एक अभिनन्दन ग्रन्थ "सांख्यिकी व कृषि विज्ञान में लेख" जिसमें जाने-माने सांख्यिकों,

---

* संशोधित संस्करण अब प्राप्य है।

कृषि अर्थशास्त्रियों तथा सम्बद्ध कार्यकर्त्ताओं द्वारा अंशदत्त लेख हैं प्रकाशित किया जोकि उनके ६२वें जन्मदिवस के अवसर पर भेंट किया गया। जिन्होंने इस ग्रन्थ में योगदान किया उनके प्रति संसद् आभारी है। मुद्रण मूल्य आंशिक रूप से भारत सरकार द्वारा प्रदत्त अर्थ सहायता से पूरा हुआ। पुस्तक का मूल्य संसद् के सदस्यों के लिए २० रुपये तथा अन्य लोगों के लिए २५ रुपये रखा गया है।

हमें गहन दुःख के साथ, संसद् के उपाध्यक्षों में से एक, डा० वी० जी० पान्से के असामयिक निधन का समाचार देना पड़ रहा है। २२ जुलाई १९६९ को वे स्वर्गवासी हुए। वे संसद् के संस्थापक सदस्य थे। यह कहना अत्युक्ति न होगी कि संसद अपने वर्तमान स्तर के लिए डा० पान्से की दूरदर्शिता, अथक प्रयासों तथा निष्ठापूर्वक परिपोषण की ऋणी है।

संसद का २२वाँ वार्षिक सम्मेलन १६ से १८ दिसम्बर १९६८ को पटना में हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन पटना विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० के० के० दत्त ने किया। बिहार राज्य विश्वविद्यालय आयोग के उपाध्यक्ष आचार्य श्री बद्रीनाथ वर्मा ने प्रत्यायुक्तों का स्वागत किया। भारतीय सांख्यिकी संस्था के अनुसंधान एवं प्रशिक्षण विभाग के निदेशक डा० सी० आर० राव, एफ० आर० एस०, ने "विभेदकारी विश्लेषण में अभिनव प्रगति" विषय पर प्रावैधिक अभिभाषण दिया। सम्मेलन की अवधि में दो संगोष्ठियों का आयोजन निम्न विषयों पर किया गया : (१) विकासोन्मुख देशों में कृषि सम्बन्धी संगणना की योजना, (२) वन-सांख्यिकी का वर्तमान स्तर। प्रथम संगोष्ठी की अध्यक्षता कृषि मूल्य आयोग के सदस्य श्री एस० सी० चौधरी ने तथा दूसरी संगोष्ठी की अध्यक्षता बिहार वन विभाग के मुख्य संरक्षक श्री एस० पी० शाही ने की। भारतीय प्रत्यायुक्तों के अतिरिक्त श्रीलंका से श्री एफ० सी० वी० विक्रमरत्ने तथा थाईलैण्ड से श्री देजोसवानन्द ने प्रथम संगोष्ठी में भाग लिया।

डा० राजेन्द्र प्रसाद जोकि संसद् की स्थापना काल से ही १६ वर्ष तक इसके अध्यक्ष रहे, की यादगार में संसद् ने "डा० राजेन्द्र प्रसाद स्मारक व्याख्यान" की शुरूआत की जो कि प्रतिवर्ष संसद् के वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर दिया जाता है। पहला व्याख्यान "कृषि में उन्नति की मुख्य कमानियाँ" शीर्षक के अन्तर्गत संसद् के १८वें वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर फोर्ड फाउन्डेशन के डा० डब्ल्यू० डी० हॉपर द्वारा त्रिवेन्द्रम में दिया गया। दूसरा व्याख्यान एफ० ए० ओ० के सांख्यिकी विभाग के अध्यक्ष डा० डी० पी० सुखात्मे ने संसद् के १९वें वार्षिक सम्मेलन में 'खाद्योत्पादन में आत्मनिर्भरता, क्या भारत इसे प्राप्त कर सकता है" विषय पर कटक में दिया। तीसरा व्याख्यान 'भारतीय कृषि में क्रान्ति" विषय पर आयात निर्यात संशोधन समिति के अध्यक्ष श्री एस० सुब्रह्मण्यम ने संसद् के २०वें वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर वाल्टेयर में दिया। चौथा व्याख्यान भारतीय सरकार के राष्ट्रीय श्रम आयोग के सदस्य सचिव डा० बी० एन० दातार ने "भारत में ग्रामीण

श्रम" विषय पर लखनऊ में हुए २१वें वार्षिक सम्मेलन में दिया। पाँचवाँ व्याख्यान "अर्थ उन्नति और कृषि मूल्य नीति" विषय पर मूल्य आयोग के अध्यक्ष डा० अशोक मित्रा ने पटना में हुए २२वें वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर दिया। अनुग्रह नारायण सिन्हा अनुसन्धान संस्था, पटना के निदेशक डा० ए० के० दास गुप्ता ने स्मारक व्याख्यान की अध्यक्षता की। सम्मेलन के अन्तर्गत अंशदत्त लेखों को पढ़ने के लिए दो अधिवेशन हुए जिनमें से एक की अध्यक्षता कोलोरोडो विश्वविद्यालय, अमेरिका के सांख्यिकी विभाग के प्राध्यापक डा० जे० एन० श्रीवास्तव और दूसरे की अध्यक्षता बिहार सरकार के साँख्यिकी विभाग के संयुक्त निदेशक, डा० लक्ष्मीनारायण ने की। दोनों अधिवेशनों में कुल ३१ प्रावैधिक लेख प्रस्तुत किये गये।

सदैव की भाँति रेलवे अधिकारियों ने पटना में हुए २२वें वार्षिक सम्मेलन में भाग लेने वाले सदस्यों तथा प्रत्यायुक्तों को रियायत प्रदान की। संसद् इन रेल अधिकारियों का धन्यवाद करती है।

१९६८-६९ वर्ष के लिए संसद् के परीक्षित लेखे का विवरण संलग्न है। लेखा परीक्षा सदैव की भाँति एक व्यावसायिक लेखा परीक्षक के द्वारा की गई है।

इस वर्ष में संसद के कार्य की सफलता संसद् की कार्यकारिणी परिषद् के सभी सदस्यों की सक्रिय सहायता से सम्भव हो सकी। देश तथा विदेशों में अनेक सांख्यिकी विशेषज्ञों ने पत्रिका में छापने के लिए प्राप्त लेखों के सम्बन्ध में निर्णय करने में संसद् की सहायता की। संसद् उन सबका धन्यवाद करना चाहती है। संसद् पत्रिका का हिन्दी परिशिष्ट तैयार करने के लिए श्री बी० बी० पी० एस० गोयल का भी धन्यवाद करती है। अन्त में संसद् के कर्मचारियों का उनकी कर्तव्यनिष्ठा के लिए मैं धन्यवाद करता हूँ।

भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद्, नई दिल्ली

३० जून १९६९ को समाप्य वर्ष के लिये आय तथा व्यय का लेखा

व्यय				आय			
१९६७-६८		१९६८-६९		१९६७-६८		१९६८-६९	१९६८-६२
	वेतनार्थ				सदस्यता वृत्तियों द्वारा		
	कम : पत्रिका लेखा में	२०८०·००					
७६२·०४	स्थानान्तरित किया	१५६०·००	५२०·००	४५०·००	आजीवन सदस्यता वृत्तियाँ		८२२·१०
	अन्य व्यय			२४८४·००	साधारण सदस्यता वृत्तियाँ वर्ष		२,७००·००
	डाक तथा डाक बक्स नवी-				६७-६८ की सदस्यता वृत्तियाँ		५४·००
१०५४·७७	करण व्यय	११३४·७०					
६०·६३	छपाई तथा लेखन सामग्री	३३३·६६			अनुदान द्वारा		
२७·१५	बैंक व्यय	२२·२५			उड़ीसा सरकार		१,०००·००
५६ ३५	परिवहन व्यय	१४२·९०			उत्तर प्रदेश सरकार ने सम्मेलन		
१३५·२३	विविध व्यय	८३·०८		५०००·००	के लिए दिये		
३२·३१	साइकिल मरम्मत व्यय	६९·१५		४६३·९३	बचत खाते पर ब्याज	३१७·४४	
४००·००	लेखा परीक्षा व्यय	३००·००		१६७८·५३	सावधिक जमा पर ब्याज	१,९०६·५२	
···	दूरभाष व्यय	४७८·३७		१३९·००	विविध आय द्वारा		
३७·३५	मनोरंजन व्यय	२२·६५			(विनिमय के कारण)	···	२,२२३·९६
···	विनिमय के कारण अन्तर	१३·२५					
७३·५०	पत्रिका की जिल्द बँधाई	४२·००					
१,८८७·२१		२६४२·०१					
१,४१५·४६		१९८१·४९	६६०·५२				
४७१·८३							

	वार्षिक सम्मेलन व्यय				
७६५·००	यात्रा व्यय		७००·००		
	सम्मेलन व्यय, सम्मेलन सचिव द्वारा खर्च किया गया (उनके प्रमाण पत्र				
५,०००·००	द्वारा)				
	मूल्य ह्रास जो बट्टे खाते किया गया				
२६·००	फरनीचर पर १०% की दर से		२३·००		
	साइकिल पर १५% की दर से		१८·००	४१·००	
	व्यय से अधिक आय जिसे				
२४१५·८१	साधारण रक्षित कोष में रखा गया		४८७८·५४		
१०,२१५·५८		योग	६८००·०६	१०,२१५·६८	
				योग	६,८००.०६

६४ रीगल बिल्डिंग, नई दिल्ली
दिनांक १३-१२-६९

(ह०) सी० एस० भटनागर एण्ड कं०
शासपत्रित लेखापाल

भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद् नई दिल्ली

३० जून १९६९ को समाप्त वर्ष के लिये आय तथा व्यय (पत्रिका) लेखा

१९६७-६८	व्यय	१९६८-६९	१९६७-६८	आय		१९६८-६९
३,३३६·९८	प्रारम्भिक माल	३७७५·११	७८८०·०३	पत्रिका के लिए प्रति वर्ष चन्दा		६६३७·३४
६,४०६·९५	पत्रिका की छपाई का व्यय	६०४५·९५		अनुदान द्वारा		
२,२३६·०९	कर्मचारीगण वेतनार्थ (अनुपातीय)	१५६०·००	५००·००	राष्ट्रीय विज्ञान संस्था, नई दिल्ली		
१४१५·४६	अन्य-व्यय अनुपातीय	१९८१·४९	१५०·५०	गुजरात सरकार, अहमदाबाद		
				कृषि निदेशक, महराष्ट्र राज्य, पूना	५००·००	
				संयुक्त कृषि निदेशक, उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ	१०,००·००	
				अवर सचिव, खाद्य एवं कृषि मंत्रालय, आई० सी० ए० आर, नई दिल्ली	१,६००·००	
						३,१००·००
				शेष माल		
				१६ वें खण्ड तक (i) (ii) (नाममात्र मूल्य)		१·००
				खण्ड १७ (१)		३२२·४०
				खण्ड १७ (२)		४७२·५०

खण्ड १८ (१)	४२१·६४
खण्ड १८ (२)	४३६·८०
खण्ड १९ (१)	४४०·१४
खण्ड १९ (२)	३७९·४०
खण्ड २० (१)	१५५·७५
खण्ड २० (२)	४३३·६४
	३,०६३·२७
वर्ष में घाटा	५६१·९४
कुल रु०	१३,३६२·५५

	३,७७५·११
	१,१४०·३४
कुल रु०	१३,३६२·५५
	१३,४४५·४८

सी० एस० भटनागर एण्ड कं० के लिये

ह०—सी० एस० भटनागर
शासपत्रित लेखापाल

६४ रीगल बिल्डिंग, नई दिल्ली

ता०.....

भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद्, नई दिल्ली

(अनुसन्धान विभाग)

३१ मार्च १९६९ को समाप्य वर्ष के आय तथा व्यय का लेखा

व्यय		आय		
स्थापना के लिये	१५,९१३·००	खाद्य एवं कृषि मन्त्रालय, नई दिल्ली से		
कार्यालय का किराया	६,०००·००	प्राप्त अनुदान द्वारा		
विमर्श गोष्ठी व्यय		१. अनुसन्धान विभाग के लिये	२४,०००·००	
पटना में हुई विमर्श गोष्ठी के		२. डा० पान्से अभिनन्दन ग्रन्थ के लिये	६,०००·००	
लिये यात्रा व्यय	१३१५·५०			
				३०,०००·००
सामान्य व्यय	७७·९५	वर्ष में कमी जो कि तुलित पत्र		
लेखन सामग्री व्यय	२५५·०९	में स्थानान्तरित की गई		६०३·५४
परिवहन व्यय	२८·४०			
लेखा परीक्षा व्यय	२००·००			
डा० पान्से अभिनन्दन ग्रन्थ के प्रकाशनार्थ अनुदान	६,०००·००			

मूल्य ह्रास जो बट्टे खाते डाला गया

फर्नीचर	१०% की दर से	५०·००	
प्रतिलिपित्र	१५% की दर से	२३६·००	
गणक	१५% की दर से	५१२·००	
दीवार घड़ी	१५% की दर से	१५·६०	
			८१३·६०

कुल रुपये ३०,६०३·५४ कुल रुपये ३०,६०३·५४

६४ रीगल बिल्डिंग, नई दिल्ली
ता० २३-५-१९६९

हमें दी गई लेखा पुस्तकों, प्रमाणकों तथा सूचना
के आधार पर जाँचा और सही प्रमाणित किया
ह०—सी० एस० भटनागर, शासपत्रित लेखापाल
वास्ते सी० एस० भटनागर एण्ड को०